रविवार 27 दिसंबर, 2020

विषय — क्रिश्चियन साइंस

स्वर्ण पाठ: **लूका** 18: 27

"जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।"
— मसीह यीशु

उत्तरदायी अध्ययन: **मरकुस 16: 15-18**
दानिय्येल 4: 3
भजन संहिता 77: 14

15 तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।
16 जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।
17 और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे।
18 सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जांए तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।
3 उसके दिखाए हुए चिन्ह क्या ही बड़े, और उसके चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रगट होती है! उसका राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥
14 अद्भुत काम करने वाला ईश्वर तू ही है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 1 : 1-3, 12 (जैसा), 13

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था।
3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

12 … जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।
13 वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

2. लूका 1 : 26-28 (*से*:), 30 (डर)-35, 37

26 छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया।
27 जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरूष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था।
28 और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है।
30 हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।
31 और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना।
32 वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा।
33 और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।
34 मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरूष को जानती ही नहीं।
35 स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।
37 क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरिहत नहीं होता।

3. यूहन्ना 6 : 1 (यीशु)-3, 5, 6, 8-11, 26 (वास्तव में)-29

1 इन बातों के बाद यीशु गलील की झील अर्थात तिबिरियास की झील के पास गया।
2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्य कर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उन को देखते थे।
3 तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने चेलों के साथ वहां बैठा।
5 तब यीशु ने अपनी आंखे उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलेप्पुस से कहा, कि हम इन के भोजन के लिये कहां से रोटी मोल लाएं?
6 परन्तु उस ने यह बात उसे परखने के लिये कही; क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करूंगा।
8 उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा।
9 यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछिलयां हैं परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं?

10 यीशु ने कहा, कि लोगों को बैठा दो। उस जगह बहुत घास थी: तब वे लोग जो गिनती में लगभग पांच हजार के थे, बैठ गए:
11 तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके बैठने वालों को बांट दी: और वैसे ही मछिलयों में से जितनी वे चाहते थे बांट दिया।
26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।
27 नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।
28 उन्होंने उस से कहा, परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया; परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो।

4. यूहन्ना 12 : 44 (वह)-46

44 यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है।
45 और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजने वाले को देखता है।
46 मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।

5. यूहन्ना 14 : 10 (पिता जो), 12, 14

10 … पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

6. 1 कुरिन्थियों 2 : 5 (आपका), 12-14, 16

5 … कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो॥
12 परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।
13 जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिला कर सुनाते हैं।

14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है।
16 क्योंकि प्रभु का मन किस ने जाना है, कि उसे सिखलाए? परन्तु हम में मसीह का मन है॥

7. 1 इतिहास 16 : 11, 12, 24

11 यहोवा और उसकी सामर्थ की खोज करो; उसके दर्शन के लिए लगातार खोज करो।
12 उसके किए हुए आश्चर्यकर्म, उसके चमत्कार और न्यायवचन स्मरण करो।
24 अन्यजातियों में उसकी महिमा का, और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्य-कर्मों का वर्णन करो।

8. लूका 9 : 1, 2

1 फिर उस ने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बिमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया।
2 और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बिमारों को अच्छा करने के लिये भेजा।

9. लूका 10 : 2 (*से 1st* ,), 16 (*से 1st* ;), 20 (आनन्दित मत हो)

2 और उस ने उन से कहा।
16 जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है।
20 … इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 293 : 28-31

क्रिश्चियन साइंस सत्य और उसके वर्चस्व, सार्वभौमिक सद्भाव, ईश्वर की पवित्रता, अच्छे और बुरे की बुराई को प्रकाश में लाता है।

2. 180 : 25-30

जब मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित होता है, सभी चीजों को समझने वाला वर्तमान मन मनुष्य जानता है कि भगवान के साथ सभी चीजें संभव हैं। इस जीवित सत्य का एकमात्र तरीका, जो बीमारों को चंगा करता है, ईश्वरीय मन के विज्ञान में पाया जाता है जैसा कि मसीह यीशु ने सिखाया और प्रदर्शित किया है।

3. 343 : 14-20

यीशु त्रुटि से सब छीन लेता है, जब उसकी शिक्षाओं को पूरी तरह से समझा जाता है। दृष्टांत और तर्क से वह अच्छे उत्पादक बुराई की असंभवता की व्याख्या करता है; और वह वैज्ञानिक रूप से इस महान तथ्य को प्रदर्शित करता है, जो यह साबित करता है कि गलत तरीके से चमत्कार कहा जाता है, कि पाप, बीमारी, और मृत्यु विश्वास हैं - भ्रमपूर्ण त्रुटियां - जिसे वह नष्ट कर सकता था और नष्ट कर सकता था।

4. 275 : 6-12, 23 (उस)-24

दिव्य विज्ञान का प्रारंभिक बिंदु यह है कि भगवान, आत्मा, संपूर्ण है और न ही कोई अन्य शक्ति है और न ही मन — वह ईश्वर प्रेम है, और इसलिए वह दिव्य सिद्धांत है।

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है।

...अर्थात्, सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान। इसलिए सभी वास्तव में मन की अभिव्यक्ति है।

5. 150 : 10 (यह)-21

... क्रिश्चियन साइंस का मिशन अब, जैसा कि इसके पहले के प्रदर्शन के समय में था, मुख्य रूप से शारीरिक उपचार में से एक नहीं है। अब, जैसा कि, संकेत और चमत्कार शारीरिक रोग के आध्यात्मिक उपचार में गढ़ा जाता है; लेकिन ये संकेत केवल इसकी दिव्य उत्पत्ति को प्रदर्शित करने के लिए हैं, - दुनिया के पापों को दूर करने के लिए मसीह-शक्ति के उच्च मिशन की वास्तविकता को प्रमाणित करने के लिए।

भौतिक विज्ञान के विज्ञान (तथाकथित) का मानना होगा कि व्यक्ति और मन दोनों ही रोग के अधीन हैं, और वह भी, व्यक्तिगत विरोध के बावजूद और दिव्य मन के नियम के विपरीत।

6. 52 : 19-28

"दुखों का आदमी" भौतिक जीवन और बुद्धिमत्ता की श्रेष्ठता और सभी समावेशी ईश्वर की ताकतवर वास्तविकता को अच्छी तरह से समझता है। ये मन की चिकित्सा या क्रिएचरियन साइंस के दो मुख्य बिंदु थे, जिसने उन्हें प्यार से सशस्त्र किया। ईश्वर की सर्वोच्च सांसारिक प्रतिनिधि, ईश्वरीय शक्ति को प्रतिबिंबित करने की मानवीय क्षमता

की बात करते हुए, केवल अपने युग के लिए नहीं, बल्कि सभी युगों के लिए, अपने शिष्यों से कहा। "कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा;" और "और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे।"

7. 328 : 14-30

मनुष्य की शक्ति के बारे में यह समझ, जब वह ईश्वर से सुसज्जित है, ईसाई इतिहास से दुखी हो गया है। सदियों से यह निष्क्रिय है, ईसाई धर्म का एक खोया हुआ तत्व। हमारे मिशनरी बाइबिल को भारत ले जाते हैं, लेकिन क्या यह कहा जा सकता है कि वे इसे व्यावहारिक रूप से समझाते हैं, जैसा कि जीसस ने किया था, जब सैकड़ों लोग प्रतिवर्ष सर्प-दंश से मर जाते हैं? आध्यात्मिक कानून को समझना और यह जानना कि कोई भौतिक कानून नहीं है, यीशु ने कहा: "विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि... सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जांए तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।" यह अच्छी तरह से ईसाईजगत का मानना था और इस पवित्र कहावत का पालन करता था।

यीशु का वादा अनित्य है। अगर यह केवल उनके वर्तमान शिष्यों को दिया जाता, तो पवित्रशास्त्रीय संदर्भ में "आप" लिखा होता, न कि "वे"।

8. 11 : 14-15

अब, अतीत की तरह, ये शक्तिशाली कार्य अलौकिक नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च प्राकृतिक हैं।

9. 591 : 21-22

चमत्कार। जो दैवीय रूप से स्वाभाविक है, लेकिन उसे मानवीय रूप से सीखना चाहिए; विज्ञान की एक घटना।

10. 134 : 31 (*से*,)

एक चमत्कार भगवान के नियम को पूरा करता है,

11. 471 : 13-17, 20-21

दिव्य विज्ञान के तथ्यों को स्वीकार किया जाना चाहिए, - हालांकि इन तथ्यों के रूप में सबूत बुराई, पदार्थ द्वारा, या भौतिक अर्थों द्वारा समर्थित नहीं हैं, - क्योंकि ईश्वर और मनुष्य सह-अस्तित्व का प्रमाण आध्यात्मिक अर्थ से पूरी तरह से कायम है। ... "परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य [सामग्री] झूठा ठहरे!"

12. 418 : 21-7

सभी रूपक तर्क सत्य के इस सरल नियम से प्रेरित हैं, जो सभी वास्तविकता को नियंत्रित करता है। आपके द्वारा नियोजित सत्य तर्कों और विशेष रूप से सत्य और प्रेम की भावना से जो आप मनोरंजन करते हैं, आप बीमारों को चंगा करेंगे।

त्रुटि को नष्ट करने के अपने प्रयासों में नैतिक और साथ ही भौतिक विश्वास को भी शामिल करें। सभी प्रकार की बुराईयों को दूर करो। "सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" हर प्रकार की त्रुटि के लिए सत्य बोलें। ट्यूमर, अल्सर, ट्यूबरकल्स, सूजन, दर्द, विकृत जोड़ों, स्वप्न-छाया को जागृत कर रहे हैं, नश्वर विचारों की काली छवियां, जो सत्य के प्रकाश से पहले भाग जाती हैं।

एक नैतिक सवाल बीमारों की वसूली में बाधा बन सकता है। गुप्त त्रुटि, वासना, ईर्ष्या, बदला, द्वेष, या घृणा हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी या यहाँ तक कि बीमारी में विश्वास पैदा करेगी। इस दिशा में सभी प्रकार की त्रुटियां होती हैं। आपका सच्चा पाठ्यक्रम दुश्मन को नष्ट करना है, और ईश्वर, जीवन, सत्य और प्रेम के क्षेत्र को छोड़ देना है, यह याद रखना कि भगवान और उनके विचार अकेले वास्तविक और सामंजस्यपूर्ण हैं।

13. 342 : 21-26

क्रायश्चियन साइंस पापी व्यक्ति को जगाता है, काफिरों की याद दिलाता है, और असहाय अमान्य आदमी को दर्द के सोफे से उठाता है। यह गूंगे को सत्य के शब्द बोलते हैं, और वे आनन्द के साथ उत्तर देते हैं। यह बहरे को सुनने के लिए, लंगड़े के लिए चलने के लिए और अंधे को देखने का कारण बनता है।

14. 37 : 22-27, 29-31

यह संभव है, - हाँ, यह प्रत्येक बच्चे, पुरुष और महिला का कर्तव्य और विशेषाधिकार है, - कि उन्हें कुछ हद तक स्वास्थ्य और पवित्रता के सत्य और जीवन के प्रदर्शन द्वारा मास्टर के उदाहरण का पालन करना चाहिए। ईसाई उसके अनुयायी होने का दावा करते हैं, लेकिन क्या वे उस तरीके से उसका अनुसरण करते हैं जो उसने आज्ञा दी थी? ... "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो!" "बीमारों को चंगा करो।"

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6